Geog-M 201

प्रश्न - नियोजन की प्रक्रिया में सामयिक नियोजन का औचित्य समझाइए।

Explain the justification of temporal planning in the process of planning.

नियोजन की प्रक्रिया में सामयिक नियोजन का उल्लेखनीय महत्व है। यही कारण है कि नियोजन के लिए कार्यक्रम अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक योजनाएँ बनायी जाती हैं। नियोजन के लिए संसाधन को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए निश्चित समयावधि कार्यक्रम बनाया जाता है।

यही कारण है कि भारत में वार्षिक तथा पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई जाती हैं। इन योजनाओं में अलग अलग कार्यों के लिए अलग अलग धनराशि का आवंटन किया जाता है तथा एक समयावधि में विकास दर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा जाता है। साथ ही साथ समय समय पर इस कार्यक्रम का पुनर्निरीक्षण भी किया जाता है।

अल्पकालिक नियोजन

वार्षिक नियोजन :- किसी क्षेत्र की समस्या को पहचान कर उस क्षेत्र के लिए अल्पकालीन नियोजन बनाए जाते हैं जैसे बाढ़ पीड़ितों को दी जानेवाली सहायता, भूकम्प पीड़ित, दंगा पीड़ित लोगों को दिये जानेवाली सुविधा तथा उनके पुनर्वास के लिए किया जानेवाला प्रयास भी इसी नियोजन के अंतर्गत आता है।

समस्याग्रस्त क्षेत्रों के लिए भी उनके विकास के लिए कई बार वार्षिक योजनाएँ बनायी जाती हैं। जैसे महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र, गुजरात के कच्छ का रन क्षेत्र, बिहार का विदर्भ, छत्तीसगढ़ का दण्डकारण्य प्रदेश।

classmate

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार का प्रदेश है। इनके लिए भी कभी कभी अल्पकालीन योजनाएं का निर्माण किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर साम्प्रदायिक दंगा के कारण जो 3000 परिवार बेघर हुए तथा 80 लोग मारे गए 345 लोग घायल हुए इनलोगों के पुनर्वास के लिए बनाया गया नियोजन एक अल्पकालिक नियोजन है।

उड़ीसा में आए फलिन तूफान के समय जो लोग बेघर हुए, कैम्पों में शरण लिए। उनके लिए बनायी गई नियोजन इसी प्रकार का नियोजन है। इस प्रकार से तत्कालिक समस्याओं को पहचान कर उन्हें प्राथमिकता में व्यवस्थित कर उनके लिए योजना बनाना तथा उन्हें लागू करना व पुनर्निरीक्षण करना नितांत आवश्यक है।

दीर्घकालिक योजना — देश की विभिन्न असमानताओं को दूर करने के लिए दीर्घकालिक नियोजन की नितांत आवश्यकता है तथा संतुलित विकास के लिए दीर्घकालिक नियोजन की प्रक्रिया अपनायी जाती है।

भारत में स्वतंत्रता के बाद से ही पंचवर्षीय योजनाएँ चल रही है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना 2012-17 देश की 11वीं पंचवर्षीय योजना है।

इस पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों में विकास हेतु अलग अलग

का आवंटन किया जाता है। जैसे प्रारम्भ से ही कृषि पर जो दिया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास के लिए 1300 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय द्वितीय विश्व युद्ध में अत्यधिक धन का नुकसान हुआ तथा खाद्यान्न अभाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस कारण से कृषि के विकास हेतु सिंचाई सुविधा का विस्तार, मशीनीकरण तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग पर बल दिया गया।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में औद्योगीकरण पर विशेष बल दिया गया। देश में विभिन्न भारी उद्योगों लगाए गए। देश के 5 भारी लौह इस्पात उद्योग इसी योजना काल में लगाए गए।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में स्थिरता के साथ विकास को लक्ष्य रखा गया। रोजगार पर बल दिया जाने लगा।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना काल में रोजगार हेतु प्रशिक्षण को महत्व दिया जाने लगा तथा कृषि व उद्योगों के साथ-साथ बैंकिंग क्षेत्रों के विकास के लिए भी प्रयास किया जाने लगा।

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना का प्रमुख लक्ष्य गरीबी उन्मूलन था ("गरीबी हटाओ देश बचाओ" का नारा दिया गया। जिसके तहत पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम, सूखा ग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम, मरुस्थलीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम चलाए गए।

Scanned with CamScanner

छठी पंचवर्षीय योजना में नगरीकरण औद्योगीकरण एवं शिक्षा के विकास में बल दिया गया।

सातवीं पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाई। इस कारण से यह योजना लगभग असफल रही।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में पुनः कृषि को प्राथमिकता दी गयी जिस कारण से अबतक की योजनाओं में 8वीं पंचवर्षीय योजना में सर्वाधिक कृषि विकास दर्ज किया गया।

नवीं पंचवर्षीय योजना में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को भी शामिल किया गया। यह उदारीकरण की नीति 11वीं पंचवर्षीय योजना तक जारी है।

दीर्घकालिक नियोजन के उदाहरण =

(1) दण्डकारण्य विकास प्राधिकरण —

भारत में दंडकारण्य सबसे पिछड़ा जनजातीय प्रदेश है। यह क्षेत्र सघन वन वाला क्षेत्र है तथा खनिज संसाधन युक्त प्रदेश है। देश का ~~सबसे~~ सर्वश्रेष्ठ किस्म का लौह अयस्क बैलाडिला में पाया जाता है। यह क्षेत्र सामाजिक - आर्थिक (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार) के क्षेत्र में विशेष पिछड़ा प्रदेश है। इस पिछड़े प्रदेश के विकास के लिए विशेष मंडल का गठन किया गया है जो इस क्षेत्र के विकास के लिए विशेष काम करेगी परन्तु इस मंडल के गठन के

Scanned with CamScanner

बावजूद अपेक्षित विकास नहीं हो रहा है।
स्वतंत्रता के बाद जब देश का विभाजन हुआ तब इस प्रदेश में पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को बसाया गया तथा इनके अधिवासन एवं विकास के लिए योजनाएँ बनायी गयी।

(ii) दामोदर घाटी निगम — अमेरिका के टेनेसी घाटी के आधार पर भारत में 1948 में दामोदर घाटी मंडल का गठन किया गया तथा नदी बेसिन उपागम के तहत इस क्षेत्र के विकास के लिए मुख्यतः सिंचाई सुविधा का विकास, विद्युत उत्पादन एवं मलेरिया को नियंत्रित करना था। इस मंडल के अंतर्गत दामोदर नदी में बाँध बनाकर सिंचाई सुविधा का विकास किया गया। जल विद्युत संयंत्र भी लगाए गये। इस बाँध के निर्माण से "प० बंगाल का दुख का दरिया" कहलाने वाली यह नदी वरदान साबित होने लगा। इसी नदी के माध्यम से 17000 मेगावाट विद्युत का भी उत्पादन किया जा रहा है।

बाद में दामोदर बेसिन उपागम को पंचवर्षीय योजना के साथ जोड़ दिया गया। अबतक इसके 8 बाँध तथा एक अवरोध बाँध बनाया जा चुका है।

(iii) दार्जिलिंग प्राधिकरण — पश्चिम बंगाल के अविकसित क्षेत्र दार्जिलिंग के लिए भी योजना बनायी गयी है।

classmate

Scanned with CamScanner

(iv) मरुस्थलीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम – मरुस्थलीय क्षेत्र के विकास के लिए भी दीर्घकालीन योजना बनायी गई है।

(v) विशेष विकास कार्यक्रम – विशेष विकास कार्यक्रम भी एक प्रकार का दीर्घ कालीन विकास कार्यक्रम है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि किसी भी प्रदेश के संतुलित व टिकाऊ विकास के लिए नियोजन किया जाता है। इसके प्रमुख कारक निम्नलिखित है –

(i) संसाधन
(ii) लक्ष्य
(iii) निश्चित समयावधि
(iv) प्रस्तावित कार्यक्रम

नियोजन प्रक्रिया में लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय अवधि का होना परमावश्यक होता है तभी हम एक सही विकास को प्राप्त कर पायेंगे। समय-समय पर इसका कार्य का आकलन भी जरूरी होता है जिससे हमें ज्ञात होगा कि कार्यक्रम किस सीमा तक सफल रहा। बिना किसी समय अवधि का नियोजन प्रक्रिया सफल नहीं हो सकता है।

Scanned with CamScanner